Printed Pages – 2

PG-21296

M. A. (Final) Examination, 2021

SANSKRIT

Paper : Fifth

(Kavya)

(काव्य)

Time Allowed : Three hours

Maximum Marks : 70

नोट : सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है। लिपि सुवाच्य बनाइये।

1. (अ) किसी **एक** पद्य की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिये— 7

(क) जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमेलब्धकामा:॥

(ख) हस्ते लीला कमलमलके बालकुन्दानुविद्धं
नीतालोध्र प्रसवरजसा पाण्डुमनने श्रीः।
चूडापाशे नवकुरवकं चारुकर्णे शिरीषं
सीमन्ते चत्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्॥

(ब) मेघदूत के आधार पर उज्जयिनी के सौन्दर्य अथवा 'मेघमार्ग' का वर्णन कीजिये। 7

2. (अ) निम्नावतरित पद्यों में से किसी **एक** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये— 7

(क) अधीतिबोधाचरण प्रचारणैर्दशश्चतस्त्रः प्रणयन्नुपाधिभिः।
चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतस्स्वयं न वेद्मि विद्यासु चतुर्दश स्वयम्॥

(ख) फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।
त्वयाऽद्यतस्मिन्नपि दण्डधारिणा कथं न पत्या धरणी हृणीयते॥

(ब) नैषधीयचरित के आधार "हंसविलाप" **अथवा** "राजा नल" के सौन्दर्य का वर्णन कीजिये। 7

3. (अ) किसी **एक** गद्य खण्ड की सप्रसंग एवं ससन्दर्भ व्याख्या कीजिये— 7

(क) तां प्ररुदितां दृष्ट्वा चन्द्रापीडस्तत्क्षणमचिन्तयत्— अहो! दुर्निवारता व्यसनोपनिपातानाम् यदि दृशीमप्याकृतिमनभि-भवनीयामात्मीयां कुर्वन्ति। सर्वथान न कञ्चन स्पृशन्ति शरीर धर्माणमुपतापा:। बलवती हि द्वन्द्वानां पृवृत्तिः। इदम

परमधिकतरमुपजनितमतिमहन्मनसि मे कौतुकमस्या वाष्पसलिलपातेन न हि अल्पीयसा शोककारणेन क्षेत्रीक्रियन्ते एवंविधा मूर्तय:। न हि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहताचलति वसुधेति। संवर्धितकुतुहलश्च शोकस्मरणहेतुतामुपगतमपराधि-नमिवात्मानमवगच्छन उत्थाय प्रस्रवणादञ्जलिना मुखप्रक्षालमुदकमुपनिन्ये।

(ख) मन्ये च सकलजगन्नयनानन्दकरं शशिबिम्बं विरचयता लक्ष्मीलीलावासभवनानि कमलानि सृजता ब्रह्मणैतदान-नाकारकरणकौशलभ्यास एव कृत: अन्यथा किमिव हि सदृशवस्तुविरचनायां कारणम्। अलीकं चेदं यथा किल सकला: कला: कलावतौ बहुलपक्षे क्षीयमाणस्य सुषुम्नानाम्ना रश्मिना रविरापिबतीति। ता: खल्वस्य गभस्तय: समस्ता वपुरिदमाविशन्ति इति। कुतोऽन्यथा रूपापहारिणि क्लेशबहुले तपसि वर्तमानस्येदं लावण्यं इति चिन्तयन्तीमेव मामविचारितगुणदोषविशेषो रूपैकपक्षपाती नवयौवनसुलभ: कुसुमायुधकुसुमसमयमद इव मधुकरी परवशा-मकरोच्छ्वसितै: सह।

(ब) कादम्बरी के महाश्वेता वृतान्त के आधार पर 'महाश्वेता' **अथवा** 'चन्द्रपीड' का चरित्र-चित्रण कीजिये। 7

4. (अ) किसी **एक** श्लोक की ससन्दर्भ एवं सप्रसंग व्याख्या कीजिये— 7

(क) दिवाकराद्रक्षति यो गुहासुलीनं
दिवाभीतमिवान्धकारम्।
क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने
ममत्वमुच्चै:शिरसां सतीव॥

(ख) कृताभिषेकां हुतजातवेदसं
त्वगुत्तरासङ्गवतीमधीतिनीम्।
दिदृक्षवस्तामृषयोऽभ्युपागमन्-
न धर्मवद्धेषुवय: समीक्ष्यते॥

(ब) कुमारसम्भव के प्रथम सर्ग के आधार पर 'हिमालय वर्णन' **अथवा** पञ्चम सर्ग के आधार पर 'पार्वती की तपस्या' का वर्णन कीजिये। 7

5. (अ) महाकाव्य के उद्भव एवं विकास की चर्चा कीजिये। 7

अथवा

रघुवंश महाकाव्य के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये।

(ब) गद्य की उत्पत्ति तथा विकास पर निबन्ध लिखिये। 7

अथवा

महाकवि दण्डी और दशकुमार चरित का परिचय दीजिये।